

डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 5, यिर्मयाह की रचना

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने निर्देश में हैं। यह यिर्मयाह की रचना पर सत्र 5 है।

मैं वास्तव में यिर्मयाह की पुस्तक का अध्ययन करने में आपके प्रयासों के लिए आपकी सराहना करना चाहता हूँ।

मैं जानता हूँ कि यह बाइबल के कई अन्य भागों से अलग है। यह वास्तव में पुराने नियम की सबसे लंबी पुस्तक है। और कई बार, शायद जब आप पुस्तक को शुरू में पढ़ते हैं, तो आप सोचते हैं, मैं इस लंबी, भ्रमित करने वाली पुस्तक को कैसे समझूँ? अगले कुछ सत्रों में मैं इस बात पर विचार करना चाहूँगा कि हम यिर्मयाह की पुस्तक को एक पुस्तक के रूप में कैसे देखते हैं। और इस विशेष सत्र में यिर्मयाह की पुस्तक की रचना और यिर्मयाह की पुस्तक को कैसे एक साथ रखा गया, इस बारे में बात करना।

मुझे लगता है कि हम समझते हैं कि भले ही यिर्मयाह परमेश्वर का वचन है, और हम फिर से मानते हैं, 2 तीमुथियुस अध्याय तीन, श्लोक 16, सभी शास्त्र परमेश्वर द्वारा प्रेरित हैं। यह हमें परमेश्वर द्वारा दिया गया है। 2 पतरस 1:21, पवित्र पुरुषों ने पवित्र आत्मा द्वारा हवा में पाल की तरह आगे बढ़ते हुए बात की।

लेकिन यह कोई ऐसी किताब नहीं है जो स्वर्ग से गिरी हो। यह ऐसी किताब भी नहीं है जिसमें हर बार जब यिर्मयाह उपदेश देता था, तो कोई न कोई उसकी कही बातों को लिखने के लिए मौजूद रहता था और उसे तुरंत किताब में जोड़ दिया जाता था। यह ऐसी किताब नहीं थी जिसमें परमेश्वर यिर्मयाह को पहाड़ पर ले गया और उसे बताया कि उसे क्या लिखना चाहिए।

इस लंबी किताब को तैयार करने में एक लंबी प्रक्रिया शामिल थी। यिर्मयाह की सेवकाई उस समय से विस्तारित हुई जब उसे योशियाह के 13वें वर्ष, 626 ईसा पूर्व में बुलाया गया था, जो लगभग 580 ईसा पूर्व तक चली। इसलिए, हम एक ऐसी सेवकाई के बारे में बात कर रहे हैं जो लगभग 50 वर्षों तक चली।

और इसलिए, उस मंत्रालय को चित्रित करने वाली एक पुस्तक को एक साथ रखना और उसका प्रतिनिधित्व करना, जाहिर तौर पर इसमें एक लंबी और सम्मिलित प्रक्रिया थी। यिर्मयाह की पुस्तक के करीब पहुंचने पर कुछ विद्वानों के कुछ उद्धरण हैं। सबसे पहले, एंड्रयू शीड ने यह टिप्पणी की है, और हो सकता है कि आप इससे सहमत हो सकें क्योंकि आप जेरेमिया को पढ़ने और किताब को समझने की कोशिश कर रहे हैं।

जेरेमिया लंबा है, दोहराव से भरा है, अपने कालक्रम में गैर-रैखिक है, और लगातार एक शैली से दूसरी शैली में घूमता रहता है। जेरेमिया की किताब पर अपनी टिप्पणी में आरपी कैरोल, जो वास्तव में, मुझे लगता है, इस किताब के संदेश को समझने के लिए अत्यधिक संदेहपूर्ण दृष्टिकोण अपनाते हैं, हालांकि, कुछ बयान देते हैं, जिनके बारे में हमें सोचने की जरूरत है। वह कहते हैं, आधुनिक पाठक के लिए, यशायाह, यिर्मयाह और यहेशकेल की पुस्तकें पुस्तकों के रूप में वस्तुतः समझ से बाहर हैं।

फिर वह यह कहता है: जो व्यक्ति यिर्मयाह की पुस्तक से भ्रमित नहीं होता वह इसे नहीं समझता। और मुझे याद है कि मैं कभी-कभी यिर्मयाह की किताब पर अपना शोध प्रबंध लिखता था और सोचता था कि यह बिल्कुल सही है। लेकिन फिर भी, मुझे लगता है कि यह अत्यधिक संदेहपूर्ण दृष्टिकोण है।

जैसा कि हम जेरेमिया के बारे में एक किताब के रूप में सोच रहे हैं, मैं हमें दो छवियां देना चाहता हूं जिनके बारे में हम शायद सोच सकते हैं। कल्पना कीजिए कि कोई व्यक्ति डॉ. बिली ग्राहम जैसे किसी व्यक्ति के मंत्रालय को एक पुस्तक में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा है। एक लंबा मंत्रालय, उनके उपदेशों के अंश, अक्सर कालक्रम या समय या उनके जीवन में चल रही घटनाओं के बिना।

इसे समझने की कोशिश करना और डॉ. ग्राहम के मंत्रालय की तस्वीर को एक साथ रखना बहुत मुश्किल काम हो सकता है। एक और छवि जिसके बारे में मैं सोचता हूं वह यह है कि हम यिर्मयाह की किताब के बारे में ऐसे सोच सकते हैं जैसे हम एक पुराने फार्महाउस के बारे में सोचते हैं। जैसे ही आप उस घर को देखते हैं, आपको एहसास होता है कि वहां एक प्रारंभिक घर था, और परिवार के विभिन्न सदस्यों के आने के बाद इसमें कई अतिरिक्त, पंख और विस्तार जोड़े गए हैं, क्योंकि घर का स्वामित्व शायद बदल गया है।

कभी-कभी हमें यह समझने के लिए उस घर के फ्लोर प्लान को देखना पड़ता है कि इसे क्यों और कैसे बनाया गया था। इसलिए, मैं चाहूंगा कि आज इस सत्र में हम केवल रचना के बारे में सोचें और यिर्मयाह की पुस्तक को एक साथ कैसे रखा गया था। फिर, इसके बाद के सत्र में, यिर्मयाह की पुस्तक का अवलोकन करें और समझें कि इस पुस्तक में एक क्रम है, एक कालक्रम है, एक प्रवाह है, और एक अर्थ है जो हमें इसे समझने में मदद करता है।

यिर्मयाह की पुस्तक की रचना को देखते समय जो मुद्दे सामने आते हैं, उनमें से एक यह है कि हम पहचानते हैं कि इसमें विभिन्न शैलियाँ और सामग्री के प्रकार शामिल हैं। वास्तव में, यिर्मयाह की पुस्तक के पहले के आलोचनात्मक अध्ययनों में से एक में, बर्नार्ड ड्यूहेम ने यिर्मयाह की पुस्तक में कविता और यिर्मयाह की पुस्तक में गद्य के बीच अंतर किया। सिगमंड मोविनकेल आए और उस अध्ययन में जोड़ते हुए, उन्होंने उल्लेख किया कि यिर्मयाह की पुस्तक में तीन अलग-अलग विशिष्ट शैलियाँ हैं।

उन्होंने इन्हें ए, बी और सी सामग्री के रूप में संदर्भित किया। मोविनकेल ने जिस सामग्री की पहचान की वह यिर्मयाह की काव्यात्मक भविष्यवाणियाँ थीं। ये काव्यात्मक रूप में संक्षिप्त भविष्यवाणियाँ हैं।

वे बहुत आम हैं, खासकर अध्याय 1 से 25 तक। आलोचनात्मक विद्वानों ने इसे पैगंबरों द्वारा अपना संदेश संप्रेषित करने का प्राथमिक तरीका माना है। वास्तव में, अगर हम सामान्य रूप से भविष्यवाणी की पुस्तकों को देखें, तो वे काव्यात्मक भविष्यवाणियों से भरी हुई हैं, जहाँ ज्वलंत कल्पना, समानता और शक्तिशाली त्वरित छवियों के साथ, पैगंबरों ने अपना संदेश संप्रेषित किया है।

मोविनकेल ने जिस दूसरी तरह की सामग्री की पहचान की, वह बी सामग्री या कथात्मक विवरण या भविष्यवक्ता के जीवन और मंत्रालय की कहानियाँ थीं। यिर्मयाह की पुस्तक को अद्वितीय बनाने वाली एक बात यह है कि इसमें यिर्मयाह के जीवन से जुड़ी कई कहानियाँ हैं। वास्तव में, इस संबंध में यिर्मयाह जैसी एकमात्र अन्य भविष्यवाणी वाली पुस्तक योना की पुस्तक है।

योना एक बहुत ही संक्षिप्त पुस्तक है। यशायाह की पुस्तक से इसकी तुलना करें तो यशायाह में 66 अध्याय हैं, लेकिन वास्तव में केवल दो खंड हैं, अध्याय 6 से 8, अध्याय 37 से 39, जिनमें यशायाह के जीवन से कथाएँ और कहानियाँ हैं। इसलिए, इस संबंध में यिर्मयाह अद्वितीय है।

कथा का बहुत अधिक व्यापक उपयोग है। और फिर अंत में, सी सामग्री वह है जिसे मोविनकेल ने गद्य उपदेश के रूप में संदर्भित किया है। ये उपदेश काव्यात्मक भविष्यवाणियों के रूप में होने के बजाय हैं; ये उपदेश हैं जो अधिक लंबे-प्रवाह वाले गद्य विवरण हैं।

अपने पादरी के उपदेशों की प्रतिलिपि की कल्पना करें। ऐसे अंश हैं जहाँ यिर्मयाह का उपदेश, किसी अर्थ में, उपदेश की प्रतिलिपि जैसा दिखता है। इनमें से एक का उदाहरण, और मुझे लगता है कि यिर्मयाह की पुस्तक का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा, और मैं यहाँ सिर्फ़ कुछ छंद पढ़ना चाहता था, अध्याय 11 में दिया गया गद्य उपदेश है।

अध्याय 11 में गद्य उपदेश इस विचार पर केंद्रित है कि ईश्वर इज़राइल और यहूदा को वाचा के उल्लंघन के लिए दंडित कर रहा है। तो जाहिर है, यह यिर्मयाह की किताब में एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है। और यहीं से यह परिच्छेद शुरू होता है।

पद 1 में कहा गया है, जो वचन यहोवा की ओर से यिर्मयाह के पास पहुंचा, इस वाचा के वचन सुनो, और यहूदा के मनुष्यों और यरूशलेम के निवासियों से कहो। तुम उन से कहो, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, उस मनुष्य को शाप दो जो इस वाचा के वचन जो मैं ने तुम्हारे पुरखाओं को मिस्र देश से निकालने के समय बान्धा था, न सुने। लोहे की भट्टी में से कह रहा है, मेरी बात सुनो और जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ वह करो।

इसलिथे तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और मैं तुम्हारा मार्गदर्शक होऊंगा, जिस से जो शपथ मैं ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी, कि उनको दूध और मधु की धाराएं बहानेवाला देश दूंगा, उसको मैं आज के

दिन के समान दृढ़ कर सकूंगा। तब मैंने उत्तर दिया, ऐसा ही होगा, प्रभु। और इस प्रकार, मार्ग और भी आगे बढ़ता है।

यह हमें इस विवरण, इस उपदेश के बारे में और अधिक जानकारी देता है। और इसलिए, यहाँ हमारे पास केवल संक्षिप्त काव्यात्मक भविष्यवाणियाँ नहीं हैं। हमारे पास एक विस्तृत उपदेश है।

अब, इन तीन अलग-अलग प्रकार की सामग्री के साथ आलोचनात्मक विद्वानों ने जो किया है, वह यह है कि उन्होंने पुस्तक की कविता को सबसे प्रारंभिक खंड और अधिक वास्तविक और प्रामाणिक यिर्मयाह के रूप में देखा है। और उन्होंने आख्यानों और गद्य उपदेशों को लिया है और उन्हें भविष्यवक्ता की बाद की पुनर्व्याख्या के रूप में देखा है। और उन्होंने इन्हें व्यवस्थाविवरणवादी संपादकों द्वारा संपादित किए जाने के रूप में देखा है।

और अलग-अलग स्तर पर, वे इन बाद के स्रोतों और इन बाद की सामग्रियों को भविष्यवक्ता यिर्मयाह और उसके संदेश की पुनर्व्याख्या करते हुए देखते हैं। तो, वास्तव में आलोचनात्मक विद्वता में एक प्रश्न बन गया है: ऐतिहासिक यिर्मयाह के बारे में हम वास्तव में कितना जान सकते हैं? क्या इस पुस्तक में यिर्मयाह का चित्र यथार्थवादी और ईमानदार है, या क्या इन बाद के स्रोतों ने हमें मूल रूप से जो हम वास्तव में देखते हैं उससे एक अलग व्यक्ति दिया है? मैं इसके बारे में बस कुछ विचारों और कुछ प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में सोचना चाहता था। मेरा मानना है कि इन अलग-अलग स्रोतों का एक कारण यह स्पष्ट संभावना है कि यिर्मयाह ने अपने संदेश को विभिन्न तरीकों से संप्रेषित किया।

कभी-कभी, शायद एक सड़क उपदेशक के रूप में, शक्तिशाली, संक्षिप्त छवियों और भविष्यवाणियों में संवाद करना फायदेमंद था। लेकिन मुझे लगता है कि यह भी बहुत संभावना है कि ऐसे समय भी थे जब यिर्मयाह मंदिर गए और अपने मंदिर के उपदेश का प्रचार किया, कि अधिक विस्तृत उपदेश थे और कुछ ऐसा था जो हम रविवार की सुबह अपने पादरी से सुनते हैं। मुझे लगता है कि दूसरी बात यह है कि यह हमारे लिए आश्चर्यजनक नहीं है कि उपदेशों और यिर्मयाह के आख्यानों में कई शब्द और वाक्यांश व्यवस्थाविवरण और व्यवस्थाविवरण इतिहास की पुस्तक के समान हैं।

राजाओं की पुस्तक, जो उस इतिहास का हिस्सा है, 550 ईसा पूर्व में लिखी गई थी। यिर्मयाह ने अपना मंत्रालय 580 ईसा पूर्व के आसपास समाप्त किया। इसलिए, मुझे लगता है कि यह बहुत संभव है कि जो लोग इसमें शामिल थे, संपादक जो इन ऐतिहासिक पुस्तकों की रचना और 550 ईसा पूर्व और छठी शताब्दी में निर्वासन के समय उनके अंतिम संपादन में शामिल थे, वे यिर्मयाह की पुस्तक की अंतिम रचना और संपादन में भी शामिल रहे होंगे। ये पुस्तकें एक-दूसरे से जुड़ी हुई थीं, और कई बार, प्रभाव की दिशा निर्धारित करना बहुत मुश्किल होता है।

मुझे लगता है कि तीसरी बात यह समझना है कि जब हम व्यवस्थाविवरण इतिहास की पुस्तकों की तुलना करते हैं, जैसा कि उन्हें लेबल किया गया है, और हम यिर्मयाह की पुस्तक की तुलना करते हैं, तो यिर्मयाह की पुस्तक में अद्वितीय विचार हैं जो इसके संदेश को विशिष्ट बनाते हैं। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण, या राजाओं में व्यवस्थाविवरण इतिहास का इतिहास इस बात

पर जोर देने वाला है कि मनश्शे और उसके 55 वर्षों की दुष्टता के कारण परमेश्वर यरूशलेम का न्याय करता है।

परमेश्वर कहता है कि मैं यरूशलेम को बर्तन की तरह पोंछने जा रहा हूँ। यिर्मयाह दाऊद वंश के उत्तरार्ध और योशियाह के बाद आने वाले राजाओं की विफलता पर अधिक ध्यान केंद्रित करने जा रहा है, जिसे हमने अपने पिछले पाठ में देखा था। राजाओं के विपरीत, यिर्मयाह पुनर्स्थापना के विचार पर अधिक दृढ़ता से जोर देने जा रहा है।

राजाओं में पुनर्स्थापना का संदेश बहुत कम है। पुस्तक के अंत में, हम देखते हैं कि यहोयाकीन को जेल से रिहा किया जा रहा है, लेकिन इस बात का स्पष्ट कथन या उद्देश्य कि परमेश्वर पूरी पुनर्स्थापना में क्या करने जा रहा है, पूरी तरह से नहीं है। इसलिए, यिर्मयाह इस संबंध में व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की तरह अधिक दिखता है, न कि व्यवस्थाविवरणीय इतिहास की तरह।

मुझे लगता है कि चौथी बात जो हम कविता, गद्य और कथा के उपयोग से समझ सकते हैं, वह यह है कि कई मायनों में, यिर्मयाह का एक चिंतनशील पुनर्रचना हुई है। परन्तु मेरा विश्वास है कि वह कार्य स्वयं यिर्मयाह और बारूक ने किया था। यिर्मयाह पर एनआईसीओटी टिप्पणी में जॉन थॉम्पसन जैसे रूढ़िवादी टिप्पणीकारों ने इस बात पर जोर दिया है कि यिर्मयाह और बारूक स्वयं, जैसा कि उन्होंने यिर्मयाह के मंत्रालय के लंबे वर्षों में प्रतिबिंबित किया, उन्हें इस बात की गहरी समझ हो गई कि यिर्मयाह का संदेश किस बारे में था।

उन्हें इस बात की गहरी समझ हो गई कि परमेश्वर की योजना, परमेश्वर की योजना और भविष्य के लिए परमेश्वर का इरादा क्या था। यिर्मयाह के संदेश की शुरुआत में, यिर्मयाह उपदेश दे रहा है और लोगों को पश्चाताप करने के लिए बुला रहा है। योशियाह के सुधारों के दौरान, संभावना है कि वे निर्णय से बच सकते हैं।

लेकिन उनके जीवन के अंत में उस संदेश की पुनरावृत्ति में, वह निर्वासितों के लिए, उनके लौटने के लिए, उनके लिए ईश्वर के पास वापस आने का संदेश बन जाता है। और इसलिए मुझे लगता है कि यिर्मयाह के मंत्रालय के बारे में जो चिंतन चल रहा है, उसके लिए व्यवस्थाविवरणवादी संपादकों का होना जरूरी नहीं है, जिन्होंने उसके संदेश को संशोधित और बदल दिया है। यह स्वयं यिर्मयाह और बारूक हो सकते हैं क्योंकि उन्हें ईश्वर के उद्देश्यों और डिजाइनों की गहरी समझ हो गई है।

और फिर अंत में, विभिन्न प्रकार की सामग्री के इस मुद्दे के संबंध में, चाहे हम काव्यात्मक दैवज्ञ, गद्य कथाएँ, या गद्य उपदेश पढ़ें, इन विभिन्न सामग्रियों से उभरने वाला यिर्मयाह का दृष्टिकोण इतना भिन्न नहीं है। इस पुस्तक में एक बुनियादी धार्मिक एकता है। कुछ प्रमुख विचार हैं जो सामने आने वाले हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम किताब का कौन सा हिस्सा देख रहे हैं या किस तरह की सामग्री देख रहे हैं।

इस बात पर जोर दिया जाएगा कि यहूदा ने वाचा तोड़ी है। उन्होंने परमेश्वर के नियम का उल्लंघन किया है। उन्होंने मूर्तियों की पूजा की है।

और इसके परिणामस्वरूप, वे परमेश्वर की सज़ा के पात्र हैं। यह केवल व्यवस्थाविवरण नहीं है। यह पूरे पुराने नियम का संदेश है।

दूसरा मुख्य विचार यह है कि प्रभु बेबीलोन को न्याय के साधन के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। और प्रभु बेबीलोन को अपने साधन के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। फिर से, यह सिर्फ़ गद्य या कविता नहीं है।

यह पूरी किताब का संदेश है। और फिर, जब हम पूरी किताब को देख रहे हैं, कविता और गद्य दोनों ही भागों में, तो यह वादा है कि न्याय के बाद, पुनर्स्थापना होगी। इसलिए, मेरा मानना है कि हमें यिर्मयाह को लेकर उसे स्रोतों में विभाजित करने की आवश्यकता नहीं है।

इस पुस्तक में एक धार्मिक एकता है। हमें गद्य को कविता के विरुद्ध खड़ा करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यिर्मयाह की एक एकीकृत तस्वीर है जो इन सभी विभिन्न सामग्रियों से उभरती है। एक संभावना यह है कि साहित्यिक कारण भी हैं कि यिर्मयाह का संदेश इन विभिन्न शैलियों में, इन विभिन्न रूपों में क्यों संप्रेषित किया जाता है।

लुईस स्टुहलमैन ने जो सुझाव दिया है वह यह है कि गद्य उपदेश वास्तव में यिर्मयाह के संदेश और मंत्रालय के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करने के तरीके के रूप में पुस्तक में रखे गए हैं। और इसलिए अंत में जो घटित हो रहा है वह यह है कि, जैसे ही हमारे पास यिर्मयाह की काव्यात्मक वाणी है, ये सभी अलग-अलग छवियां हम पर बमबारी करने लगती हैं। यहूदा एक बेवफा पत्नी है।

परमेश्वर यहूदा के लोगों के विरुद्ध गर्जनेवाले सिंह को भेज रहा है। यहूदा इन सभी विभिन्न तरीकों से परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती रहा है। गद्य उपदेश जो करते हैं वह यह है कि वे सभी काव्यात्मक कल्पनाओं को लेते हैं और उनका सारांश प्रस्तुत करते हैं।

वास्तव में, वे हमारे लिए एक क्लिफ नोट्स सारांश प्रदान करते हैं कि यिर्मयाह का संदेश किस बारे में था। तो स्टुहलमैन का सुझाव है कि यिर्मयाह 1 से 25 में, हमारे पास पांच विशिष्ट गद्य उपदेश हैं जो वास्तव में, कई मायनों में, यिर्मयाह के समय के लोगों की मदद करते हैं और विशेष रूप से आधुनिक पाठकों के रूप में हमें इन सभी काव्य छवियों को एक साथ समेटने में सक्षम होने में मदद करते हैं और समझने के लिए, यिर्मयाह का संदेश किस बारे में है। और आम तौर पर ये गद्य उपदेश उस गलतफहमी पर ध्यान केंद्रित करने वाले हैं जो यहूदा के लोगों को भगवान के साथ अपनी वाचा के बारे में है।

उन्हें विश्वास हो गया है कि ईश्वर उनकी रक्षा करेगा। भगवान उन्हें आशीर्वाद देने वाले हैं। चाहे कुछ भी हो, भगवान उन पर नजर रखेंगे।

गद्य उपदेश वाचा की एक अलग समझ प्रदान करते हैं। यिर्मयाह 7, इन सारांश अंशों में से एक, उन्होंने मंदिर और वहां भगवान की उपस्थिति पर झूठा भरोसा रखा है जो उनकी रक्षा करने में

सक्षम है। यिर्मयाह 10 एक गद्य उपदेश है जिसमें बताया गया है कि इज़राइल ने अपनी मूर्तिपूजा द्वारा वाचा का उल्लंघन किया है।

यिर्मयाह अध्याय 11, एक गद्य उपदेश में कहा गया है, यिर्मयाह चेतावनी दे रहा है कि यहूदा के लोग अपनी अवज्ञा के कारण वाचा के अभिशापों का अनुभव करने जा रहे हैं। वाचा केवल उनकी रक्षा करने और उन्हें आशीर्वाद देने के लिए नहीं बनाई गई थी। यिर्मयाह 18 और 19, गद्य उपदेश इस तथ्य को समझाते हुए कि यहूदा को पश्चात्ताप करने का अवसर मिला है।

उन्होंने वह अवसर गँवा दिया है और भगवान उनका न्याय करने जा रहे हैं। और इसलिए, मेरा मानना है कि वास्तव में एक एकता है जो इन विभिन्न साहित्यिक शैलियों से उभरती है। और हम यह देख सकते हैं कि जब हम देखते हैं कि गद्य, कविता, कहानियाँ और आख्यान और उपदेश एक दूसरे के साथ कैसे बातचीत करते हैं।

यिर्मयाह की पुस्तक की रचना से संबंधित एक दूसरा मुद्दा है, जो कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों और चीजों को पीछे छोड़ रहा है जो वास्तव में इसके लिए एक प्रकार का अग्रदूत हैं। यिर्मयाह एक दिलचस्प किताब है, संभवतः किसी भी अन्य प्रमुख भविष्यवक्ताओं से अधिक, यह हमें उस प्रक्रिया के बारे में जानकारी देती है जो एक किताब के रूप में यिर्मयाह की किताब के निर्माण में शामिल थी। वास्तव में, पांच या छह अलग-अलग स्रोतों और स्थानों के संदर्भ हैं जहां यिर्मयाह ने वास्तव में इस पुस्तक के कुछ हिस्सों की रचना की है, या बारूक ने इस पुस्तक के कुछ हिस्सों की रचना की है।

और फिर इन विभिन्न स्कॉल और स्रोतों को एक साथ रखा गया है। इस सब में मुख्य अंश यिर्मयाह अध्याय 36, श्लोक एक से तीन है। उस विशेष अनुच्छेद में, परमेश्वर यिर्मयाह को अपने संदेश लिखने, उन संदेशों को बारूक को निर्देशित करने और फिर बारूक से मंदिर में उन संदेशों को पढ़ने के लिए आदेश देता है।

जिस वर्ष यह घटित होता है वह यहोयाकीम का चौथा वर्ष है। और इसका मतलब यह है कि यिर्मयाह 20 से अधिक वर्षों से उपदेश दे रहा है, इससे पहले कि उसे कभी भी विशेष रूप से उन शब्दों को लिखने का आदेश दिया जाए जिनका वह प्रचार कर रहा है। अब, मुझे नहीं लगता कि इसका मतलब यह है कि यिर्मयाह ने इन्हें कभी दर्ज नहीं किया, लेकिन इन चीजों को एक किताब में लिखने का वास्तविक तरीका, पहली बार हम देखते हैं कि ऐसा हो रहा है जो यिर्मयाह के मंत्रालय के 20 साल बाद हो रहा है।

यदि आप अध्याय जानते हैं, आपको याद है कि क्या हुआ था, यहोयाकीम ने पुस्तक को काट दिया। और फिर उसके बाद, अध्याय के अंत में, श्लोक 23 से 26 में कहा गया है, कि परमेश्वर ने यिर्मयाह और बारूक को एक और पुस्तक लिखने की आज्ञा दी। और यह कहता है कि उन्होंने पुस्तक को दोबारा लिखा।

बहुत से लोगों को लगता है कि इस पुस्तक में जो संदेश मिला है उसका मूल सार वही है जो हमें यिर्मयाह अध्याय 1 से 25 में मिलता है, जो शब्द और न्याय के वचन हैं जो वहाँ पाए जाते हैं। लेकिन यह भी कहा गया है कि जब उन्होंने दूसरी पुस्तक लिखी, तो उसमें भी कई ऐसे ही शब्द

जोड़े गए। और इसलिए, मेरा मानना है कि हम कल्पना कर सकते हैं कि यिर्मयाह की पुस्तक की पहली मूल रचना उनकी सेवकाई के 20वें वर्ष में हुई।

और फिर यिर्मयाह की सेवकाई के अगले 20 से 30 वर्षों में, उन मूल शब्दों में कई समान शब्द जोड़े गए। नए संदेश, नए उपदेश जोड़ने और शायद पुराने उपदेशों को निर्वासन और यिर्मयाह की सेवकाई के अंत में हुई घटनाओं के प्रकाश में ढालने की निरंतर प्रक्रिया थी। एक स्रोत का दूसरा उल्लेख जिस पर मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता था वह यह है कि यिर्मयाह 29.1 हमें बताता है कि यिर्मयाह ने 597 के बाद बेबीलोन में निर्वासित लोगों को एक पत्र लिखा था।

उस पत्र ने उन्हें बताया कि भविष्य के लिए परमेश्वर की योजनाएँ और परमेश्वर की योजनाएँ क्या थीं। याद रखें उन्होंने कहा था, बेबीलोन की शांति के लिए प्रार्थना करें, जैसे आपने यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना की है। उस देश में बस जाओ, वहाँ घर बनाओ, वह सामान्य काम करो जो तुम अपने परिवार के साथ करते हो, बेबीलोन के राजा की सेवा करो, और सब कुछ तुम्हारे लिए अच्छा होगा।

और फिर, 70 वर्षों के बाद, भगवान तुम्हें रिहा कर देंगे, और भगवान तुम्हें निर्वासन से वापस भेज देंगे। वह उस पत्र में था जो यिर्मयाह ने निर्वासितों को लिखा था। और इसलिए, हम कल्पना कर सकते हैं कि आशा के कुछ शब्द, वादे जो परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यिर्मयाह के माध्यम से दिए थे, उस पत्र के माध्यम से आए होंगे।

और वह पत्र उसकी पृष्ठभूमि है जो यिर्मयाह को अध्याय 29 में कहना है। यिर्मयाह अध्याय 30 में, हमारे पास यिर्मयाह 30 से 33 तक पुस्तक का एक बहुत ही महत्वपूर्ण खंड है; इसे सांत्वना की पुस्तक कहा जाता है। यह आशा का संदेश है जो ईश्वर भविष्यवक्ता यिर्मयाह के माध्यम से देता है।

और आश्चर्यजनक बात यह है कि यह भविष्यवक्ता जिसे यिर्मयाह की पुस्तक के केंद्र में कई तरह से न्याय के इतने सारे शब्द देने का आदेश दिया गया था, आशा का एक खंड है। लेकिन यह हमें बताता है कि यिर्मयाह ने आशा के इन सकारात्मक संदेशों को एक पुस्तक या स्क्रॉल में लिखा है। और इसलिए, हमें अपनी पवित्र कल्पना का थोड़ा सा उपयोग करना होगा, लेकिन मैं कल्पना कर सकता हूँ कि अध्याय 30 और 31 में पाए जाने वाले अध्याय, जो कविता हैं, और 32 और 33, जो गद्य हैं, मूल रूप से एक स्वतंत्र इकाई के रूप में खड़े हो सकते हैं।

और वे यिर्मयाह के आशा के संदेशों के प्रतिनिधि थे। यिर्मयाह 51, आयत 59 से 64 में हमारे लिए एक चौथा स्क्रॉल या चौथा स्रोत उल्लेखित है। और यिर्मयाह 50 और 51 की पुस्तक के अंतिम दो प्राथमिक अध्यायों में, हमें बेबीलोन के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ मिलती हैं।

और वे बेबीलोन के लोगों और बेबीलोन राष्ट्र और उस राजा के विरुद्ध न्याय के ये लंबे और विस्तृत संदेश हैं जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएल को दंडित करने के लिए इस्तेमाल किया था। लेकिन उन भविष्यवाणियों के अंत में, यह हमें बताता है कि सरेया, जो बारूक का भाई प्रतीत होता है और एक अन्य मुंशी जिसने यिर्मयाह की सहायता की थी, वास्तव में इस पुस्तक को सिदकिय्याह के साथ बेबीलोन ले गया था। निर्वासन से कुछ समय पहले जब सिदकिय्याह बाबुल के राजा से मिल

रहा था, तो यह कहा गया है कि सरिया ने बाबुल में पुस्तक पढ़ी और फिर एक प्रतीकात्मक कार्य किया।

उसने वह पुस्तक ली, और उसके चारों ओर एक चट्टान बाँधी, और फिर उस पुस्तक को परात नदी में फेंक दिया। और विनाश का संकेत दे रहा है, बेबीलोन राष्ट्र का अंतिम विनाश। लेकिन यहाँ एक और स्रोत है, एक और स्कॉल, फिर से, किसी संपादक से नहीं आ रहा है, किसी बाद के व्यक्ति से नहीं आ रहा है, बल्कि स्वयं यिर्मयाह से आ रहा है।

अध्याय 26 से 45 में, जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, हमारे पास यिर्मयाह की कई जीवनी संबंधी कहानियाँ और कहानियाँ हैं। और जैसे ही ये कहानियाँ यिर्मयाह अध्याय 45 में समाप्त होती हैं, वचन का एक शब्द है जो यिर्मयाह के मुंशी, बारूक को दिया गया है। इसलिए मुझे लगता है कि संभावना है कि यिर्मयाह ने इन्हें आत्मकथा के रूप में नहीं लिखा है, संभावना और संभावना यह है कि बारूक ही वह व्यक्ति था जिसने यिर्मयाह के बारे में इन कहानियों की रचना की थी।

अध्याय 45 में बारूक को दिया गया आशा का संदेश, आशा का वादा एक कोलोफॉन के रूप में कार्य करता है, जो लेखक या उस व्यक्ति की पहचान करता है जिसकी पुस्तक के इस खंड को लिखने में महत्वपूर्ण भूमिका थी और उस पर भगवान का आशीर्वाद घोषित करता है। यह एक पोस्टस्क्रिप्ट की तरह है। स्तोत्रों में, हमारे पास उपशीर्षक हैं जो हमें उपाधियाँ देते हैं। हम उस अध्याय में बारूक के साथ ऐसा ही कर सकते थे।

और फिर अंत में, यिर्मयाह की किताब के निर्माण के बारे में अन्य चीजों में से एक दिलचस्प बात यह है कि हम अक्सर किताब के एक हिस्से से कुछ अंशों की नकल देखते हैं, और वे दूसरे हिस्से में पाए जाते हैं किताब। उदाहरण के लिए, यिर्मयाह अध्याय 23, श्लोक 20, कहता है कि प्रभु का क्रोध तब तक नहीं रुकेगा जब तक कि वह अपना सब कुछ पूरा नहीं कर लेता। वही कथन सांत्वना पुस्तक के अध्याय 30, श्लोक 24 में प्रकट होता है।

अध्याय 23 प्रभु द्वारा एक धर्म शाखा उगाने के बारे में बात करता है जो दाऊद के घराने से निकलेगी। वह परिच्छेद यिर्मयाह 33, 15, और 16 में दोहराया गया है। इसलिए मुझे लगता है, फिर से, इस प्रक्रिया में यिर्मयाह और बारूक फिर से तैयार हो रहे हैं। वे यिर्मयाह के मंत्रालय को गहराई से समझ रहे हैं, या यिर्मयाह विभिन्न संदर्भों में, विभिन्न स्थितियों में मंत्रालय कर रहा है।

उनके मंत्रालय के विभिन्न भागों से संदेशों का पुनः उपयोग किया गया हो सकता है, उन्हें विभिन्न संदर्भों और स्थितियों में पुनः लागू किया गया हो। पुस्तक के आरंभिक भागों में यहूदा के बारे में न्याय के कुछ भविष्यवाणियों को पुस्तक के उत्तरार्द्ध भागों में बेबीलोन के प्रति पुनः लागू और कहा गया है। यिर्मयाह के आरंभ में, हम पाते हैं कि यिर्मयाह कहता है कि परमेश्वर का न्याय उत्तर से एक शत्रु के रूप में आने वाला है जो यहूदा पर आक्रमण करने वाला है।

यिर्मयाह के अध्याय 50 और 51 में, उत्तर से एक दुश्मन है जो बेबीलोन पर भी हमला करने वाला है। इसलिए यिर्मयाह, एक तरह से जो वास्तव में किसी अन्य पुस्तक के बारे में सच नहीं है, हमें

इस बात की जानकारी देता है कि यिर्मयाह के संदेश के विभिन्न भागों को विभिन्न स्कॉल में, विभिन्न स्रोतों में कैसे लिखा गया था। और फिर यिर्मयाह के जीवन की लंबी प्रक्रिया में, उन्हें उस रूप में रखा गया जो आज हमारे पास है।

ऐसी संभावना है कि यिर्मयाह के मरने के बाद भी, बारूक ने इस प्रक्रिया को पूरा किया, या संपूर्ण हिब्रू केनन को एक साथ लाने और इसे आदेश और डिजाइन देने के लिए जिम्मेदार संपादकों का भी इस प्रक्रिया में हाथ हो सकता है। लेकिन हम विश्वास करते हैं, और जब मैं इसका अध्ययन करता हूँ तो इस पुस्तक के बारे में मेरा दृढ़ विश्वास है कि भगवान ने न केवल इस संदेश के प्रचार में यिर्मयाह को प्रेरित किया, बल्कि भगवान ने यिर्मयाह, बारूक और किसी भी प्रेरित संपादक को भी निर्देशित किया जो हो सकता है उस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया में भी शामिल थे। और यह प्रक्रिया चाहे जितनी कठिन और जटिल रही हो, इसमें ईश्वर का हाथ था, और ईश्वर यिर्मयाह के संदेश को उस रूप में संरक्षित कर रहा था जैसा वह चाहता था और पहले इज़राइल के लोगों के लिए और फिर बाद में चर्च के लिए डिज़ाइन किया गया था। इस पुस्तक में हमारे लिए निरंतर संदेश है।

अब यिर्मयाह की पुस्तक से संबंधित एक अंतिम मुद्दा है, जो फिर से, मुझे लगता है, इस पुस्तक और रचना के विकास और गठन को दर्शाता है। और यह तथ्य है कि यिर्मयाह की पुस्तक की हमारी प्राचीन प्रतियाँ और पांडुलिपियाँ यिर्मयाह की पुस्तक के दो बहुत अलग संस्करणों को दर्शाती हैं। और पुस्तक का एक संस्करण पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद में परिलक्षित होता है जिसे सेप्टुआजेंट कहा जाता है।

और फिर दूसरा संस्करण हिब्रू पाठ या मैसोरेटिक पाठ में प्रतिबिंबित होता है, जो यिर्मयाह की पुस्तक है और यिर्मयाह का रूप है जो हमारे हिब्रू बाइबिल में पाया जाता है। मैसोरेटिक पाठ हमारी अंग्रेजी बाइबिल का भी आधार है। तो, हमारी सभी अंग्रेजी बाइबिल, चाहे वह किंग जेम्स संस्करण हो, ईएसवी, एनआईवी, एनएएसबी, वे सभी पुस्तक के हिब्रू मैसोरेटिक संस्करण पर आधारित हैं।

लेकिन जैसा कि हम यिर्मयाह की पुस्तक के दो अलग-अलग रूपों को देखते हैं, एक सेप्टुआजेंट में और एक मैसोरेटिक पाठ में, पुस्तक के इन दो संस्करणों के बीच कुछ बहुत ही दिलचस्प अंतर हैं। सबसे पहले, सेप्टुआजेंट में ग्रीक पाठ उस संस्करण से 14% छोटा है जो हमारे पास मैसोरेटिक पाठ में है। तो इसका मतलब है कि मैसोरेटिक पाठ में कम से कम या लगभग 2,700 शब्द ऐसे हैं जो ग्रीक पाठ में नहीं पाए जाते हैं।

अब वे शब्द यिर्मयाह के मंत्रालय के सार को मौलिक रूप से नहीं बदलते हैं, लेकिन यह हमें कुछ अलग अंतर्दृष्टि और विभिन्न अंशों का अलग-अलग पाठन प्रदान करते हैं। दोनों ग्रंथों के बीच दूसरा अंतर यह है कि ग्रीक पाठ का क्रम और व्यवस्था अलग है। हमारी अंग्रेजी बाइबिल में, जो मैसोरेटिक पाठ को प्रतिबिंबित करती है, यिर्मयाह ने राष्ट्रों के खिलाफ जो उपदेश दिया, वह पुस्तक के अंत में अध्याय 46 से 51 में आता है।

ग्रीक संस्करण में, वे दैवज्ञ अध्याय 25, श्लोक 13 के बाद आते हैं। इसलिए, वे पुस्तक के मध्य में पाए जाते हैं। दूसरी दिलचस्प बात यह है कि यिर्मयाह के ग्रीक संस्करण में उन दैवज्ञों का क्रम हमारे हिब्रू संस्करण और फिर, हमारी अंग्रेजी बाइबिल में मौजूद दैवज्ञों से भिन्न है।

तीसरा अंतर यह है कि, कभी-कभी, सबसे प्रसिद्ध या सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण में महत्वपूर्ण अंश होते हैं, जैसे यिर्मयाह 33 श्लोक 14 से 26। हम पुस्तक के एक महत्वपूर्ण खंड के बारे में बात कर रहे हैं जो हिब्रू संस्करण में पाया जाता है। पुस्तक लेकिन पुस्तक के सेप्टुआजेंट संस्करण में गायब है। अंत में, अंतिम अंतर यह है कि मैसोरेटिक पाठ में अतिरिक्त बातें हैं, जैसे अध्याय 2, अध्याय 7, अध्याय 16, अध्याय 27 में उपदेशों के शीर्षक, जहां एक परिचयात्मक शीर्षक दिया गया है।

प्रभु कहते हैं, ऐसी अभिव्यक्तियाँ हैं, जो एलएक्सएक्स की तुलना में मैसोरेटिक पाठ में 65 गुना अधिक दिखाई देती हैं। यह इंगित करता है कि एलएक्सएक्स संभवतः पुस्तक के अधिक प्रारंभिक संस्करण को दर्शाता है जिसमें मैसोरेटिक संस्करण द्वारा इसमें जोड़ी गई चीजें शामिल हैं। अब, जब लोग पहली बार इसके बारे में सुनते हैं, तो इससे कुछ प्रश्न उठते हैं।

मैं जानता हूँ कि यह मेरे छात्रों के लिए भ्रमित करने वाला है। इनमें से कौन सा संस्करण पहले आता है? इनमें से कौन अधिक मौलिक है? और फिर बड़ा सवाल यह है कि इनमें से कौन सा हमारे लिए परमेश्वर का वचन है? हम सोच सकते हैं कि यह स्पष्ट है कि हिब्रू संस्करण मूल है क्योंकि यिर्मयाह ने हिब्रू भाषा में बात की थी। ग्रीक एक अनुवाद है।

लेकिन जैसा कि हमने पहले ही कहा है, जो चीजें जोड़ी गई हैं और यिर्मयाह में जो परिवर्धन हमारे हिब्रू बाइबिल में पाए जाते हैं, वे संकेत देते हैं कि यह अधिक संभावना है कि उन चीजों को हटाए गए या निकाले गए किसी चीज़ के बजाय पुराने संस्करण में जोड़ा गया था। हम मृत सागर स्क्रॉल की खोज के माध्यम से यिर्मयाह की पुस्तक की बेहतर समझ भी प्राप्त कर चुके हैं, जिसने पुराने नियम के हमारे शुरुआती संस्करणों को स्थानांतरित कर दिया था जो हमारे पास लगभग एक हजार साल पहले थे। मृत सागर स्क्रॉल से हमें जो समझ में आया है वह यह है कि प्रारंभिक काल में यिर्मयाह के संभवतः हिब्रू संस्करण थे जो सेप्टुआजेंट और मैसोरेटिक पाठ दोनों में पाए गए को दर्शाते हैं।

कुमरान की चौथी गुफा में, कुछ महत्वपूर्ण टुकड़े थे, और ये यिर्मयाह की किताब के बहुत छोटे, छोटे टुकड़े थे जो वहां पाए गए थे। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि इनमें से दो टुकड़े, 4q यिर्मयाह ए और 4q यिर्मयाह सी, वहां जो कुछ है उसके आधार पर, और फिर, छोटे टुकड़े, हमारे मैसोरेटिक पाठ में जो कुछ है उसे प्रतिबिंबित करते प्रतीत होते हैं। दूसरी ओर, उसी गुफा में पाया गया पुस्तक का एक और टुकड़ा, 4q जेरेमिया बी, एलएक्सएक्स में हमारे पास मौजूद रीडिंग को प्रतिबिंबित करता प्रतीत होता है।

और इसलिए, यह हमारे लिए सुझाव देता है कि ग्रीक में होने वाले परिवर्तन हिब्रू से ग्रीक में अनुवाद का परिणाम नहीं हैं। वे उस प्रकार के परिवर्तन नहीं हैं, लेकिन यह दर्शाता है कि सेप्टुआजेंट के लिए मूल रूप से एक हिब्रू प्रोटोटाइप था और पुस्तक का एक हिब्रू संस्करण था

जो मैसोरेटिक पाठ में भी परिलक्षित होता है। तो क्या हमें इससे परेशान होना चाहिए और आखिरकार हम इसका समाधान कैसे करेंगे? मेरा मानना है कि ये दोनों संस्करण दो विशिष्ट मुद्दों से संबंधित हैं।

नंबर एक, वे यिर्मयाह की सेवकाई की अवधि से संबंधित हैं। याद रखें, उसकी सेवकाई 50 साल की अवधि में हुई। और इसलिए, यह संभावना है कि यिर्मयाह और बारूक ने पुस्तक के इन दोनों संस्करणों की रचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होगी।

LXX शायद यिर्मयाह के पहले के संस्करण को दर्शाता है, और फिर MT यिर्मयाह की पुस्तक के अंतिम रूप को दर्शाता है क्योंकि बारूक, यिर्मयाह या इसमें शामिल किसी भी अन्य प्रेरित संपादक को यिर्मयाह की सेवकाई के अंतिम महत्व के बारे में परमेश्वर की अंतर्दृष्टि थी। मुझे लगता है कि दूसरी वास्तविकता जो इन दो अलग-अलग संस्करणों को जन्म देती है वह यह तथ्य है कि यिर्मयाह की सेवकाई एक व्यापक भौगोलिक क्षेत्र में होती है। और याद रखें कि निर्वासन के बाद के दिनों में, हमारे पास ऐसे यहूदी हैं जो बेबीलोन में हैं।

हमारे पास यहूदी हैं जो वापस देश में रह रहे हैं, और आखिरकार, यिर्मयाह, बारूक और अन्य शरणार्थी मिस्र में रह रहे हैं। उनके पास फैक्स मशीन नहीं है। उनके पास प्रिंटिंग प्रेस नहीं है।

उनके पास FedEx एक्सप्रेस नहीं है जहाँ वे आसानी से संवाद कर सकें और एक दूसरे को चीजें भेज सकें। और इसलिए, मेरा मानना है कि यिर्मयाह की पुस्तक के ये दो अलग-अलग संस्करण संभवतः अलग-अलग भौगोलिक स्थानों के कारण उत्पन्न हुए जहाँ पुस्तक पढ़ी और तैयार की जा रही थी। और इसलिए, यह संभावना है कि LXX संस्करण मिस्र में प्रसारित किया गया था और यह यिर्मयाह की पुस्तक का एक पुराना रूप था।

यिर्मयाह की बाद की और विस्तृत पुस्तक, और जो निर्वासितों, बेबीलोन, इज़राइल के भविष्य की आशा पर अधिक व्यापक रूप से ध्यान केंद्रित करती है, वह थी जो बेबीलोन में प्रसारित हुई और जिसे यहूदियों द्वारा भूमि पर वापस लाया गया और प्राथमिक बन गई यहूदी लोगों का संस्करण। इसके बारे में मेरी समझ यह है कि हमें वास्तव में इस पूरे मुद्दे से परेशान होने की ज़रूरत नहीं है कि इनमें से कौन सा प्रेरित है। मेरा मानना है कि ये दोनों ही परमेश्वर के वचन को प्रतिबिंबित करते हैं।

एक और दिलचस्प मुद्दा यह है कि जैसे ही हम नए नियम के समय की ओर बढ़ते हैं, प्रारंभिक चर्च के पुराने नियम में सेप्टुआजेंट बाइबिल थी। मैसोरेटिक पाठ यहूदियों और रब्बियों के लिए हिब्रू सिद्धांत था। बहुत से लोगों ने यह प्रश्न उठाया है कि क्या हमें यिर्मयाह की पुस्तक के ईसाई संस्करण के रूप में एलएक्सएक्स का उपयोग नहीं करना चाहिए? खैर, फिर से, मेरा मानना है कि चर्च सेप्टुआजेंट का उपयोग उस विशिष्ट संदर्भ के कारण कर रहा था जिसमें वे सेवा कर रहे थे।

वे यूनानी भाषा बोलने वाले लोगों की सेवा कर रहे थे। वे जेरेमिया के एलएक्सएक्स संस्करण की एमटी से श्रेष्ठता के बारे में कोई बयान नहीं दे रहे थे। यह बस वह संस्करण है जो उस संस्कृति के साथ सबसे प्रभावी ढंग से संवाद करता है जिसमें वे थे।

मेरा मानना है कि ये दोनों ही परमेश्वर के वचन को सटीकता से प्रतिबिंबित करते हैं। मेरा मानना है कि जैसे-जैसे विद्वान यिर्मयाह की पुस्तक की जांच और अध्ययन करते हैं, उनके लिए अक्सर दो अलग-अलग संस्करणों की तुलना करना महत्वपूर्ण होता है, शायद यह समझने के लिए कि पुस्तक कैसे विकसित हुई है या शायद किसी विशिष्ट पाठ या अनुच्छेद में बेहतर पढ़ने को समझने के लिए। लेकिन अंततः, परमेश्वर अपने मंत्रालय के किसी बिंदु पर रचित यिर्मयाह के प्रारंभिक संस्करण के समय से लेकर यिर्मयाह और बारूक के अंतिम प्रतिबिंबों तक इस पूरी प्रक्रिया को निर्देशित कर रहा था कि यिर्मयाह को इज़राइल के भविष्य और भगवान की बहाली के बारे में क्या कहना था।

उदाहरण के लिए, याद रखें कि सेप्टुआजेंट में नहीं पाया जाने वाला एक अंश यिर्मयाह अध्याय 33, आयत 14 से 26 है। जब हम इस अंश को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि यह दाऊद के घराने के भविष्य से संबंधित है। यह यिर्मयाह अध्याय 23 में पाए गए अंश को दोहराता है: परमेश्वर दाऊद के लिए एक धर्मी शाखा को खड़ा करने जा रहा है।

इसमें कहा गया है कि दाऊद के सिंहासन पर बैठने के लिए कभी भी किसी व्यक्ति की कमी नहीं होगी। इसलिए, यह बाबुल में रहने वाले लोगों के लिए निर्वासन के संदर्भ में महत्वपूर्ण था। उनके लिए यह समझना महत्वपूर्ण था कि परमेश्वर ने दाऊद से जो वादे किए थे, उनके आधार पर एक आशा थी।

उस अंश में यह भी कहा गया है कि लेवियों के पास पुरोहिताई का कार्य करने के लिए कभी भी एक व्यक्ति की कमी नहीं होगी। जब लोग निर्वासन में रह रहे थे और मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए भूमि पर वापस आ रहे थे, तो उनके लिए यह समझना महत्वपूर्ण था कि परमेश्वर मंदिर में की गई पूजा को बहाल करने जा रहा था। जब दूसरा मंदिर बनाया जाएगा, तो परमेश्वर लेवियों, पुरोहिताई और उन सभी चीजों को बहाल करने जा रहा है जो इस्राएल के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं।

तो, यिर्मयाह की पुस्तक के ये दोनों संस्करण प्रेरित हैं। वे यिर्मयाह के संदेश को अलग-अलग समय पर और उसकी सेवकाई में अलग-अलग दृष्टिकोणों से दर्शाते हैं। इस सब को समेटने के लिए, हमने इस संदेश में या पुस्तक की रचना से संबंधित इस विशेष सत्र में बहुत कुछ कवर किया है।

एंड्रयू शीड ने मसोरेटिक पाठ के बारे में एक उद्धरण दिया है और बताया है कि यह हमारे लिए ईसाइयों के रूप में क्यों महत्वपूर्ण है। और मुझे क्यों लगता है कि यह संभव है कि जब परमेश्वर यिर्मयाह को धर्मग्रंथ के रूप में बनाने की प्रक्रिया को निर्देशित कर रहा था, तो यह हिब्रू कैनन में यिर्मयाह की विहित पुस्तक बन गई। शीड कहते हैं कि यह बताता है कि मसोरेटिक पाठ हमारे लिए यिर्मयाह के शब्दों के रूप में एक विशेष स्थान रखता है।

न केवल यह उसका अंतिम और अंतिम संस्करण था, बल्कि इसका लक्ष्य श्रोतागण, बेबीलोन में निर्वासित समुदाय यिर्मयाह की नज़र में, उद्धार की दिव्य योजना में भविष्य वाले लोगों का एक समूह था। चर्च के बीज बेबीलोन की धरती में बोए गए थे। और इसलिए, जब हम निर्वासन के बारे

में और उद्धार के इतिहास में निर्वासन से वापसी के बारे में यिर्मयाह द्वारा दी गई आशा को देखते हैं, तो अंततः यही चर्च का बीज है।

परमेश्वर के लोग निर्वासन से वापस आने वाले हैं और परमेश्वर निर्वासन से अंतिम पुनर्स्थापना लाने के लिए यीशु को उठाने जा रहा है। और इसलिए हमारे लिए यिर्मयाह की पुस्तक के अंतिम रूप में यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर अपने लोगों की पुनर्स्थापना के बारे में बात कर रहा था। अध्याय 24 में वापस जाते हुए, अच्छे अंजीर वे लोग थे जो बेबीलोन में रह रहे थे, उनकी धार्मिकता के कारण नहीं, बल्कि उस आशा के कारण जो परमेश्वर उन पर रख रहा था, वे वे लोग थे जो निर्वासन से वापस आएंगे और जिन्हें परमेश्वर देश में वापस लाएगा।

खराब अंजीर वे थे जो देश में रह गए थे। और यिर्मयाह का अंतिम रूप इस्राएल के भविष्य की आशा पर जोर देने वाला है। यह उन लोगों के साथ नहीं है जो देश में रहते हैं।

इस्राएल के भविष्य की आशा मिस्र में रह रहे निर्वासितों से नहीं है। इस्राएल के भविष्य की आशा निर्वासितों से है और परमेश्वर द्वारा दाऊद और इस्राएल और अपने लोगों से किए गए वाचा के वादों को पूरा करना है। और यिर्मयाह, उस सारे न्याय के साथ जो वहाँ है, उस पुस्तक का अंतिम रूप उस आशा और उस सात्वना और उस पुनर्स्थापना पर जोर देता है जो भविष्य में आने वाली है।

जैसा कि हमने यिर्मयाह की पुस्तक की रचना पर विचार किया है, हमने आज तीन विशिष्ट मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। हमने विभिन्न प्रकार की सामग्री और उन कारणों के बारे में बात की है कि यिर्मयाह की पुस्तक गद्य और पद्य दोनों से क्यों बनी है। हमने पुस्तक के भीतर मौजूद साक्ष्यों के बारे में बात की है कि यिर्मयाह की रचना विभिन्न स्रोतों, विभिन्न स्कॉल से की गई थी जिन्हें एक साथ रखा गया था।

लेकिन फिर से, यिर्मयाह और बारूक ही वे लोग हैं जिनका इस प्रक्रिया में प्रमुख हाथ था। और फिर, अंत में, हमने यिर्मयाह के विभिन्न संस्करणों को देखा है जो प्राचीन पांडुलिपियों में परिलक्षित होते हैं। सबसे पहले, सेप्टुआजेंट और एमटी ने फिर से यह समझने की कोशिश की कि यह हमें इस तथ्य की ओर इशारा कर रहा है कि यिर्मयाह की पुस्तक में वृद्धि और विकास हुआ है, लेकिन अंततः, यह पुस्तक एक एकता है जो इस्राएल के लोगों के लिए न्याय और आशा के परमेश्वर के संदेश को दर्शाती है।

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने निर्देश दे रहे हैं। यह यिर्मयाह की रचना पर सत्र 5 है।